नोट -

1. नवीन छात्रों की उच्चारण शुद्धि हेतु अमरकोष पढ़ाएँ (समयानुसार)।
2. वेदमन्त्रों की अक्षुण्ण परम्परा को बनाए रखने हेतु प्रत्येक छात्र का उच्चारण एवं स्वर शुद्ध हो इसका विशेष ध्यान रखते हुए छात्रों को उच्चारण स्थान इत्यादि से परिचित कराये।
3. नवीन छात्रों से उनका गोत्र, शाखा इत्यादि ज्ञात कर उसको स्वशाखाध्ययन कराने का प्रयत्न करें।
4. प्रत्येक वर्ष के पाठ्यक्रम का गुरुमुख से सम्पूर्ण अध्यापन एवं स्वाध्याय पूर्वक कण्ठस्थीकरण उसी वर्ष में पूर्ण करना अनिवार्य है।
5. छात्रों को परम्परागत सस्वर अध्ययन पद्धति से ही वेद अध्यापन कराना अनिवार्य है। जैसे -

   16 सन्था पद्धति

   अथवा

   10 पाठ

   10 वल्लि/दशावृत्ति/सन्था
6. प्रत्येक माह के अन्त में (पढाये गए विषयों की) मासिक परीक्षा कर छात्रों के कण्ठस्थीकरण, उच्चारण आदि की स्थिति का अवलोकन करें। यदि न्यूनता हो तो पूर्ण करें।
7. छात्रों की उच्चारण शुद्धि एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रतिदिन प्रातः एवं सायं सन्ध्या के पश्चात् विष्णुसहस्त्रनाम, महिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्, दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्, अन्नपूर्णास्तोत्रम्, भजगोविन्दम्, प्रज्ञाविवर्धनस्तोत्रम्, रामरक्षास्तोत्रम् इत्यादि स्तोत्रों का समयानुसार अभ्यास एवं पाठ करें, जिससे भारतीय परम्परा में श्रद्धा एवं उत्साह बना रहें।
8. गतवर्षों का पाठ्यक्रम छात्र को कण्ठस्थ है या नहीं ज्ञात करने हेतु परीक्षण (Assessment) किया जाएगा।
9. परीक्षक को विगत सभी वर्षों के पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछने का पूर्ण अधिकार होगा।
10. सस्वर वेदाध्ययन करने वालों की संख्या शनैः शनैः क्षीण हो रही है। अतः श्रद्धावान्, मेधावान् एवं दार्ढ्य बुद्धि वाले छात्रों की वेदाध्ययन में रुचि उत्पन्न करने हेतु आवश्यक प्रयत्न करना।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

सामवेद राणायनीय शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण प्रथमवर्ष (उत्तरमध्यमा प्रथमवर्ष / कक्षा XI समकक्ष)					
आरण्यक गान में द्वन्द्व, व्रत, शुक्रिय, महानाम्नी, पूर्वार्चिक पदपाठ सम्पूर्ण एवं छान्दोग्य उपनिषद् 4 अध्याय					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम पक्ष	द्वन्द्व पर्व प्रथम से चतुर्थ खण्ड	42 साम	5	1. ऋचा की 16 सन्धा पद्धति से अध्ययन अध्यापन करें। 2. गान के 10 पाठ एवं 10 वल्लि (दशावृत्ति) करें। 3. प्रतिदिन 4 अध्याय ऋचा के एवं 10 खण्ड गान की आवृत्ति करें।
2	द्वितीय पक्ष	द्वन्द्व पर्व पञ्चम से सप्तम खण्ड	35 साम	5	
3	तृतीय पक्ष	व्रत पर्व चतुर्थ खण्ड, पञ्चम	40 साम	5	
4	चतुर्थ पक्ष	व्रत पर्व चतुर्थ खण्ड, सप्तम	44 साम	5	
5	पञ्चम पक्ष	शुक्रिय पर्व प्रथम, द्वितीय, तृतीय खण्ड	40 साम	5	
6	षष्ठ पक्ष	पूर्वार्चिक पदपाठ प्रथम अध्याय	114 मन्त्र	5	
7	सप्तम पक्ष	पूर्वार्चिक पदपाठ द्वितीय अध्याय	126 मन्त्र	5	
8	अष्टम पक्ष	पूर्वार्चिक पदपाठ तृतीय अध्याय	118 मन्त्र	5	
9	नवम पक्ष	पूर्वार्चिक पदपाठ चतुर्थ अध्याय	115 मन्त्र	5	
10	दशम पक्ष	पूर्वार्चिक पदपाठ पञ्चम अध्याय	119 मन्त्र	5	
11	एकादश पक्ष	पूर्वार्चिक पदपाठ षष्ठ अध्याय	55 मन्त्र	5	
12	द्वादश पक्ष	उपनिषद् अर्ध अध्याय	40	5	
13	त्रयोदश पक्ष	उपनिषद् प्रथम अर्ध अध्याय	40	5	
14	चतुर्दश पक्ष	उपनिषद् प्रथम अर्ध अध्याय	40	5	
15	पञ्चदश पक्ष	उपनिषद् द्वितीय अर्ध अध्याय	40	5	
16	षोडश पक्ष	उपनिषद् द्वितीय अर्ध अध्याय	40	5	
17	सप्तदश पक्ष	उपनिषद् तृतीय अर्ध अध्याय	40	5	
18	अष्टादश पक्ष	उपनिषद् तृतीय अर्ध अध्याय	40	5	
19	नवदश पक्ष	उपनिषद् चतुर्थ अर्ध अध्याय	40	5	
20	विंश पक्ष	उपनिषद् चतुर्थ अर्ध अध्याय	40	5	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			209 साम 640 पदपाठ मन्त्र	100 गुण	

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

सामवेद राणायनीय शाखा पाठ्यक्रम

वेदविभूषण द्वितीयवर्ष (उत्तरमध्यमा द्वितीयवर्ष / कक्षा XII समकक्ष)					
उत्तरार्चिक पदपाठ सम्पूर्ण ऊहगान में दशरात्र पर्व में प्रथम - विंश = रहस्यगान में प्रथमदशति, छान्दोग्यउपनिषद् पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम अध्याय					
क्रमांक	**माह / पक्ष**	**पाठ्यक्रम बिन्दु**	**मन्त्र संख्या**	**अंक**	**अध्ययन-अध्यापन**
1	प्रथम पक्ष	उत्तरार्चिक प्रथम, द्वितीय अध्याय	46 तृचा पदपाठ	5	1. ऋचा की 16 सन्था पद्धति से अध्ययन अध्यापन करें। 2. गान के 10 पाठ एवं 10 वल्लि (दशावृत्ति) करें। 3. प्रतिदिन 4 अध्याय ऋचा के एवं 10 खण्ड गान की आवृत्ति करें।
2	द्वितीय पक्ष	उत्तरार्चिक तृतीय, चतुर्थ अध्याय	38 तृचा पदपाठ	5	
3	तृतीय पक्ष	उत्तरार्चिक पञ्चम, षष्ठ अध्याय	45 तृचा पदपाठ	5	
4	चतुर्थ पक्ष	उत्तरार्चिक सप्तम, अष्टम अध्याय	48 तृचा पदपाठ	5	
5	पञ्चम पक्ष	उत्तरार्चिक नवम अध्याय	20 तृचा पदपाठ	5	
6	षष्ठ पक्ष	उत्तरार्चिक दशम अध्याय	23 तृचा पदपाठ	5	
7	सप्तम पक्ष	उत्तरार्चिक एकादश, द्वादश अध्याय	31 तृचा पदपाठ	5	
8	अष्टम पक्ष	उत्तरार्चिक त्रयोदश, चतुर्दश अध्याय	34 तृचा पदपाठ	5	
9	नवम पक्ष	उत्तरार्चिक पञ्चदश, षोडश अध्याय	45 तृचा पदपाठ	5	
10	दशम पक्ष	उत्तरार्चिक सप्तदश, अष्टादश अध्याय	33 तृचा पदपाठ	5	
11	एकादश पक्ष	उत्तरार्चिक एकोनविंशति अध्याय	18 तृचा पदपाठ	5	
12	द्वादश पक्ष	उत्तरार्चिक विंशति अध्याय	31 तृचा पदपाठ	5	
13	त्रयोदश पक्ष	उत्तरार्चिक एकविंशति अध्याय	8 तृचा पदपाठ	5	
14	चतुर्दश पक्ष	छान्दोग्य उपनिषद् पञ्चम अध्याय	20 खण्ड	5	
15	पञ्चदश पक्ष	छान्दोग्य उपनिषद् षष्ठ अध्याय	1 खण्ड	5	
16	षोडश पक्ष	छान्दोग्य उपनिषद् सप्तम अध्याय	1 खण्ड	5	
17	सप्तदश पक्ष	छान्दोग्य उपनिषद् अष्टम अध्याय	1 खण्ड	5	
18	अष्टादश पक्ष	दशरात्र प्रथम विंश	10 साम	5	
19	नवदश पक्ष	दशरात्र प्रथम विंश	10 साम	5	
20	विंश पक्ष	रहस्य गान प्रथम दशति	10 साम	5	
नोट - कण्ठस्थीकरण, उच्चारण एवं स्वरसंचालन प्रत्येक की 100-100 अंकों की इस प्रकार 300 अंकों की परीक्षा होगी।			421 तृचा 30 साम तृचा	100 गुण	